निराजन

योगी डिवाईन सोसायटी
'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर,
स्वामिनारायण चौक, पवई,
मुंबई – ४०० ०७६

प्रभातियां १

ध्यान धर ध्यान धर धर्मना पुत्रनुं
जे थकी सर्व संताप नासे...
कोटि रविचंद्रनी कांति झांखी करे
अेवा तारा उर विशे नाथ भासे...
हे... ध्यान धर...
शिर पर पुष्पनो मुगट सोहामणो
श्रवण पर पुष्पना गुच्छ शोभे
पुष्पना हारनी पंक्ति शोभे गळे
निरखतां भक्तनां मन लोभे...
हे... ध्यान धर...
पचरंगी पुष्पनां कंकण कर विशे
बांये बाजुबंध पुष्प केरा
चरणमां श्यामने नेपुर पुष्पनां
ललित त्रिभंगी शोभे घणेरा...
हे... ध्यान धर...

अंगोअंग पुष्पनां आभरण पहेरीने
दास पर महेरनी दृष्टि करता
कहे छे मुक्तानंद भज दृढ भावशुं
सुखतणा सिंधु सर्वे कष्ट हरता...
हे... ध्यान धर...

प्रभातियां २

हे... मावजी मुज पर खूब अढळक ढळ्या
माहेरुं मंदिर धाम कीधुं...
सुख तणा सिंधु सहेजे मळ्या शामळो
तम थकी माहेरुं काज सीधुं...
हे... मावजी मुज पर...
हे... दीन दुर्बळ तणी प्रीत जाणी तमे
मुज पर महेर अतिशे ज कीधी
दोह्यली वेळाना दाम छो नाथजी
शामळा मारी संभाळ लीधी...
हे... मावजी मुज पर...

जे संग स्नेह करो तेने नव वीसरो
भक्तवत्सल तमे अधिक रसिया
बिरद पोतातणुं सत्य करवा तमे
माहरे मंदिर नाथ वसिया...
हे... मावजी मुज पर...
हे... आज अमृत तणा मेहुला वरसिया
भव तणी भावट आज भांगी
आज मुक्तानंद अधिक सुख उपज्युं
तम संगे श्याम दृढ लगनी लागी...
हे... मावजी मुज पर...

आरती

जय सद्गुरु स्वामी प्रभु जय अंतरयामी
सहजानंद दयाळु... (२), बळवंत बहुनामी...
ॐ जय सद्गुरु स्वामी...
चरण सरोज तमारां वंदु कर जोडी
प्रभु वंदु कर जोडी...

चरणे चित्त धर्याथी... (२), दु:ख नाख्यां तोडी...
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
नारायण सुखदाता द्विजकुळ तनुधारी
प्रभु द्विजकुळ तनुधारी...
पामर पतित उद्धार्या... (२), अगणित नरनारी...
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
नित्य नित्य नौतम लीला करता अविनाशी
प्रभु करता अविनाशी...
अडसठ तीरथ चरणे... (२), कोटि गया काशी...
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दर्शन करशे
प्रभु जे दर्शन करशे...
काळ कर्मथी छूटी... (२), कुटुंब सहित तरशे...
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
आ अवसर करुणानिधि करुणा बहु कीधी
व्हाले करुणा बहु कीधी...

मुक्तानंद कहे मुक्ति... (२), सुगम करी सीधी...
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...

स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !
स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !

सर्वोपरी स्वामिनारायण, प्रभु प्रेमे हुं नमुं
निष्काम धर्मने स्थापी दई,
तमे मोक्षद्धार खुल्लुं मूक्युं...
अर्पी गुणातीते भगतजी, जागास्वामी ने अदा
ज्वलंत राखी ज्योत श्रीजीनी,
भक्तोने सनाथ कीधा...
शास्त्रीमहाराजे अक्षर-पुरुषोत्तम पधराविया
योगीमहाराजे प्रत्यक्ष चैतन्य मंदिरो कीधां...
काकाजी, पप्पाजी द्धारे अखंड रह्या आप प्रभु
बा, बेनना स्वरुपने घडी कार्य कर्युं छे नवुं...
प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, प्रत्यक्ष प्रभुस्वरुप

हरिप्रसाद, अक्षरविहारी, साहेब छे आपस्वरुप...
हे नाथ ! हुं शीश नामीने कहुं,
सहजानंद तुं छे अहिनो अहि
धर्मवंशने अमर कर्यो प्रत्यक्ष स्वरुपे रही... (२)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ।
गुरु: साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नम: ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !
स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !

सहजानंदस्वामी महाराजनी जय !
अक्षरपुरुषोत्तम महाराजनी जय !

भगतजी महाराजनी जय !
जागास्वामी महाराजनी जय !
कृष्णजी अदा महाराजनी जय !
शास्त्रीजी महाराजनी जय !
योगीजी महाराजनी जय !
काकाजी महाराजनी जय !
पप्पाजी महाराजनी जय !
प्रमुखस्वामी महाराजनी जय !
महंतस्वामी महाराजनी जय !
हरिप्रसादस्वामी महाराजनी जय !
अक्षरविहारीस्वामी महाराजनी जय !
जशभाई साहेबनी जय !
प्रत्यक्ष धाम-धामी-मुक्तोनी जय !
समग्र गुणातीत समाजनी जय !
राधारमण देवनी जय !
सिद्धेश्वर महादेवनी जय !

पवनपुत्र हनुमानजीनी जय !
मंगलमूर्ति गणपति देवनी जय जय जय !

प्रात: प्रार्थना

ऊगती प्रभाओे कार्य प्रारंभमां सहाय करो अेवुं इच्छु छुं (२)
सर्व कार्यमां एक ज हेतु राजी थाये... (२) एक ज तुं...
ब्रह्मनियंत्रित ब्रह्म समाजमां सहुमां तारुं दर्शन करुं (२)
स्नेह सुधाभरी मूर्तिना सुखनी
मस्तीथी... (२) हुं मस्त रहुं
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण विनवुं हुं (२)
ऊगती प्रभाओे...
घटघटमां, प्रसंगे प्रसंगे आबालवृद्ध सहु मुक्तोमां (२)
तुं ज करे छे तुं ज प्रेरे छे
अेवुं मानी... (२) सुहृद बनुं
तारी दिव्य मूर्तिनी स्मृतिमां माहात्म्यथी सभर रहुं (२)
दिव्य जीवनना दिव्य आनंदमां

मस्त बनी... (२) तारा गुण गावुं
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण विनवुं हुं (२)
ऊगती प्रभाओे...
निमित्त बनी कार्य करी पाछा मूर्तिरुपी माळामां (२)
मान अपमान जश अपजशमां सहज हुं,
सहज सरळ स्मित करुं
अखंड अंतरमां रही अमारी रक्षा करजे तुं (२)
निर्दोषबुद्धिना अमृतपानने
जीवनमां... (२) पचावुं हुं
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण विनवुं हुं (२)
ऊगती प्रभाओे...

गोडी संग्रह

पद १ –

संत समागम किजे हो निशदिन संत समागम (२)
मान तजी संतन के मुख से... (२)

प्रेम सुधारस पीजे... (२)
हो... निशदिन संत समागम... (२)
अंतर कपट मेटके अपनो... (२),
ले उनकुं मन दीजे... (२)
हो... निशदिन संत समागम... (२)
भवदु:ख टळे बळे सब दुष्कृत... (२),
सबविधि कारज सीजे... (२)
हो... निशदिन संत समागम... (२)
ब्रह्मानंद कहे संत की सोबत... (२),
जन्म सुफल करी लीजे... (२)
हो... निशदिन संत समागम... (२)

पद २ –

संत परम हितकारी जगतमांही संत परम... (२)
प्रभु पद प्रगट करावत प्रीति... (२),
भरम मिटावत भारी... (२)
जगतमांही संत परम... (२)

परम कृपालु सकल जीवन पर... (२),
हरिसम सब दु:खहारी... (२)
जगतमांही संत परम... (२)
त्रिगुणातीत फिरत तनु त्यागी... (२),
रीत जगत से न्यारी... (२)
जगतमांही संत परम... (२)
ब्रह्मानंद कहे संतकी सोबत... (२),
मिलत है प्रगट मुरारी... (२)
जगतमांही संत परम... (२)

पद ३ –

हरि भजता सुख होय समज मन हरि भजता... (२)
हरि समरन बिन मूढ अज्ञानी... (२),
उमर दीनी खोय... (२)
समज मन हरि भजता... (२)
मात पिता युवती सुत बांधव... (२),

संग चलत नहि कोय... (२)
समज मन हरि भजता... (२)
क्यूँ अपने शिर लेत बुराई... (२),
रहना है दिन दोय... (२)
समज मन हरि भजता... (२)
ब्रह्मानंद कहे हरिने भजी ले... (२),
हित की कहत हुं तोय... (२)
समज मन हरि भजता... (२)

पद ४ –

यूँही जन्म गुमात, भजन बिन यूँही... (२)
समज समज नर मूढ अज्ञानी... (२),
काळ निकट चली आत... (२)
भजन बिन यूँही... (२)
भयोरी बेहाल फिरत है निशदिन... (२),
गुण विषयन के गात... (२)
भजन बिन यूँही... (२)

परमारथ को राह न प्रीछत... (२),
पाप करत दिन रात... (२)
भजन बिन यूँही... (२)
ब्रह्मानंद कहे तेरी मूरख... (२),
आयुष्य वृथा ही जात... (२)
भजन बिन यूँही... (२)

आरती

जय सद्‌गुरु स्वामी प्रभु जय अंतरयामी
सहजानंद दयालु... (२), जय अक्षरधामी...
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
प्रभुवर तेरी महिमा क्यों न हम गाये,
प्रभु क्यों न हम गाये...
केवल वंदन से ही... (२), संकट कट जाएं
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
नारायण सुखदाता द्विजकुल तनुधारी,

प्रभु द्विजकुल तनुधारी...
पामर पतित उबारे...(२), लाखों नर नारी
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
अगणित है लीलाएं तेरी अविनाशी,
प्रभु प्यारे अविनाशी...
चरणो में प्रभु तेरे... (२), कोटि गया काशी
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
प्रगटित पुरुषोत्तम के दर्शन जो भी करे,
प्रभु दर्शन जो भी करे...
काल कर्म से छुटे... (२), वंश सहित वो तरे
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...
करुणानिधि ये तेरी करुणा रंग लाई,
प्रभु करुणा रंग लाई...
मुक्तानंद ना संशय... (२) मुक्ति सुगम पाई
ॐ जय सद्‌गुरु स्वामी...

स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !
स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !

धून

रामकृष्ण गोविंद, जय जय गोविंद... (२)
हरे राम गोविंद, जय जय गोविंद... (२)
नारायण हरे, स्वामिनारायण हरे... (२)
स्वामिनारायण हरे, स्वामिनारायण हरे
कृष्णदेव हरे, जय जय कृष्णदेव हरे... (२)
जय जय कृष्णदेव हरे, जय जय कृष्णदेव हरे
वासुदेव हरे, जय जय वासुदेव हरे... (२)
जय जय वासुदेव हरे, जय जय वासुदेव हरे
वासुदेव गोविंद, जय जय वासुदेव गोविंद... (२)
जय जय वासुदेव गोविंद, जय जय वासुदेव गोविंद
राधे गोविंद, जय राधे गोविंद... (२)
वृंदावन चंद्र, जय राधे गोविंद... (२)

माधव मुकुंद, जय माधव मुकुंद... (२)
आनंदकंद, जय माधव मुकुंद... (२)
स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !
स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण ! स्वामिनारायण !

निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चय तव घनश्याम ।
माहात्म्यज्ञानयुक्त भक्ति तव, एकांतिक सुखधाम ॥
मोहिमें तव भक्तपनो, तामें कोई प्रकार ।
दोष न रहे कोई जातको, सुनियो धर्मकुमार ॥
तुमारो तव हरिभक्त को, द्रोह कबु नहि होय ।
एकांतिक तव दासको, दिजे समागम मोय ॥
नाथ निरंतर दर्शन तव, तव दासन को दास ।
अेहि मागुं करी विनय हरि, सदा राखियो पास ॥
हे कृपालो ! हे भक्तपते ! भक्तवत्सल ! सुनो बात ।
दयासिंधो ! स्तवन करी, मागुं वस्तु सात ॥
सहजानंद महाराज के, सब संत्सगी सुजाण
ताकु होय दृढ वर्तनो, शिक्षापत्री प्रमाण ॥

सो पत्रीमें अति बडे, नियम एकादश जोय
ताकी विक्ति करत हुं, सुनियो सब चित्त प्रोय ॥
हिंसा न करनी जन्तु की, परस्त्रिया संग को त्याग
मांस न खावत मद्यकुं, पीवत नहि बडभाग ॥
विधवाकुं स्पर्शत नहि, करत न आत्मघात
चोरी न करनी काहुंकी, कलंक न कोईकुं लगात ॥
निंदत नहि कोय देवकुं, बिन खपतो नहि खात
विमुख जीव के वदन से, कथा सुनी नहि जात ॥
अेहि धर्म के नियम में, बरतो सब हरिदास ।
भजो श्रीसहजानंद पर, छोडी ओर सब आस ॥
रही एकादश नियम में, करो श्री हरिपद प्रीत ।
प्रेमानंद कहे धाम में, जाओ निःशंक जगजीत ॥

श्लोक

कृपा करो मुज उपरे सुखनिधि सहजानंद ।
गुण तमारा गाववा बुद्धि आपजो सुखकंद ॥

अक्षर-पुरुषोत्तम अहि पृथ्वी उपर पधारिया ।
अनेक जीव उद्धारवा मनुष्यतन धारी रह्या ॥
प्रगट पुरुषोत्तम जे सुखरुप सहजानंद ।
मूळ अक्षर अेज छे स्वामी गुणातीतानंद ॥
अे बेउना गुण गाववा विचार करे छे मति ।
गति आपो अेहवी फेरफार नव रहे रति ॥

जन्म्या कौशल देश वेष बटुनो लई तीर्थ मांहि फर्या,
रामानंद मळ्या स्वधर्म चलव्यो यज्ञादि मोटा कर्या ।
मोटा धाम रच्या रह्या गढपुरे बे देश गादी करी,
अंतर्ध्यान थया नथी हरि तमे गुणातीते छो प्रगट ॥

जे उत्पत्ति तथा स्थिति लय करे वेदो स्तुति उच्चरे ।
जेना रोम सुछिद्रमां अणुसमां बृह्मांड कोटि फरे ।
माया काळ रवि शशी सुरगणो आज्ञा न लोपे क्षण ।
अेवा अक्षरधामना अधिपति श्री स्वामिनारायण ॥

महाध्यानाभ्यासं विदधतमजस्त्रं भगवतः ।

पवित्रे सम्प्राप्तं स्थितिमतिवरै कान्तिकवृषे ।
सदानन्दं सारं परमहरिवार्ताव्यसनिनं।
गुणातीतानंदं मुनिवरमहं नौमि सततम् ॥

साध्यो अष्टांगयोग, प्रगट हरितणी प्रीति माटे प्रयत्ने ।
शोधी वेदांततत्त्वो, सकल गृही लीधां जेम सिंधुथी रत्ने ।
आधि व्याधि उपाधि, प्रणत जन तणी टाळी कीधी समाधि ।
गोपाळानंदस्वामी सकळ गुणनिधि वंदु माया अबाधि ॥

शोभे निर्गुण मूर्ति वैभवभरी ज्ञानोपदेशे पूरा ।
छे भंडार समग्र साधु गुणना सर्वज्ञ मायापरा ।
ऐश्वर्यो सहु छे निजाश्रित तणा जे दोषहन्ता सदा ।
प्रेमे **प्रागजी** ब्रह्मरुप गुरुने वंदु ज वंदु मुदा ॥

इति गुणनिधिवंता, **भक्त जागा** धीमंता ।
भूमि पर अेहि संता, पंच दोषा निहंता ।
श्रितहित अनुसरता, मूळ अज्ञान हरता ।
घन सम सुख कर्ता, जनोपदेशे विचरता ॥

श्री राजदुर्ग नगरे विमले वसीने ।
श्रीजी स्वरुप महिमा हृदये धरीने ।
स्थाप्यो प्रकाश मूळ अक्षरनो प्रतापी ।
त्वां **कृष्णजी** गुरुवरं शरणं प्रपद्ये ।।

जेनुं नाम रट्या थकी मलिन संकल्पो समूळा गया ।
जेने शरण थया पछी भवतणा फेरा विरामी गया ।
जेना गान दशो दिशे हरिजनो गाये अति हर्षथी ।
एवा **यज्ञपुरुषदास** तमने पाये नमुं प्रीतथी ।।

वाणी अमृतथी भरी मधुसमी संजीवनी लोकमां ।
दृष्टिमां भरी दिव्यता नीरखता सुदिव्य भक्तो बधा ।
हैये हेत भर्युं मीठुं जननीशुं ने हास्य मुखे वर्स्युं ।
ते श्री **ज्ञानजी योगीराज** गुरुने नित्ये नमु भावशुं ।।

जेनी अमृतवाणी तो वही रही साक्षात् महिमारुपे ।
जेनी ब्राह्मीस्थिति अहो लीन करे सुभव्य अक्षरपदे ।

शरणागत निज अल्प जीव सहुना श्रेयार्थ तत्पर रहे ।
काका स्नेहलसिंधु दिव्य विभुने हैयुं तो वंदन करे ।।

जेनी वाणी विशे अखंड वहेती सुरावली ब्रह्मनी ।
किंतु थई अज्ञात अल्प समीपे रसबस सहुमां रही ।
जीवे जे अलमस्त स्वामीश्रीजीमां छे मोक्षदाता वळी ।
पप्पा जोगीस्वरुप विभु शरणे झुकी रहु भावथी ।।

दीक्षा अर्पी अहो गुणातीत समी जेने गुरु जोगीए ।
काका ने वळी आप दिव्य द्वयनुं अद्वैत अनोखुं ज छे ।
भेदे साक्षी अनंतना स्वरुप आ शास्त्रीमहाराजनुं ।
एवा **स्वामी हरिप्रसाद** चरणे वंदन सदा हुं करुं ।।

निष्ठा तो परिपूर्ण अद्भुत अहो जेनी स्वरुपे दीसे ।
मूर्ति सिद्धदशा अनादिनी खरी ने धैर्य साक्षात् वसे ।
प्रासादे निज धाम चैतन्य विशे स्वामी बिराजी गया ।
स्वामी अक्षरना विहारी तमने छे सर्वनी वंदना ।।

शोभो साधुगुणे सदा सरळ ने जक्ते अनासक्त छो ।
शास्त्रीजी वळी योगीजी उभयनी कृपातणुं पात्र छो ।
धारी धर्मधुरा समुद्र सरखा गंभीर ज्ञाने ज छो ।
नारायणस्वरुपदास गुणीने स्नेहे ज वंदुं अहो ।।

जे साक्षात् महिमातणुं स्वरुप छे भागी अहो योगीना ।
तेजस्वी शूरवीर नित्य हसता पक्षे रहे भक्तना ।
सर्वाधार सदाय साधकगणे नेता युवानो तणा ।
एवा गौरवपूर्ण ने सुहृद ते **साहेब**ने वंदना ।।

(देखिये पृ. क्र. 7)

रात्रि प्रार्थना

आखा दिवसमां तारी भक्ति मानी
जे कर्यु, विचार्यु ते ले स्वीकारी... (२)
आखा दिवसमां...
मन, कर्म, वचने राजी तने (२)

मारे करवो छे एवुं हतुं मने
मनधार्यु तोये कांई थयुं होय (२)
तो क्षमा करजे प्रभु मने... (२)
आखा दिवसमां...
जाणे अजाणे वफादारी तारी (२)
चूकी दु:खी थया अमहिमामां भळी
हठ, मान, ईर्ष्याथी कर्या (२)
होय ओशियाळा तो देजो माफी... (२)
आखा दिवसमां...
जाणपणानो दरवाजो छोडी (२)
स्वामी अभाव-विक्षेपना मार्गे चढी
तने भूली बीजुं चिंतवन थयुं होय (२)
तो क्षमा मागुं छुं पाये पडी... (२)
आखा दिवसमां...
अनुवृत्ति जाणी तने गमशे करी (२)
जे कर्यु तेमां न होय भक्ति तारी

करवानुं होय ते ना कर्युं होय (२)
तो फरी सूझाडो ओ प्राणपति... (२)
आखा दिवसमां...
मोंघा मूली मूर्ति तें सस्ती कीधी (२)
रुडा प्रारब्ध माटे तें सेवा दीधी
जागृत, सुषुप्ति, स्वप्नमांही (२),
तारा थई रहीअे ओ दयानिधि...
आखा दिवसमां...

थाळ

आविया छोगलाधारी मारे घेर आविया छोगलाधारी
लाडु जलेबी ने सेव सुंवाळी
हुं तो भावे करी लावी छुं घारी
मारे घेर आविया...
सूरण पूरण ने भाजी कारेलां पापड वडी वघारी
वतांक वालोळनां शाक कर्यां

में तो चोळाफळी छमकारी
मारे घेर आविया...
काजु कमोदना भात कर्या में तो दाळ करी बहु सारी
लींबु काकडीनां लेजो अथाणां,
कढी करी छे काठियावाडी
मारे घेर आविया...
वघारेला भातमां नाख्या वटाणा
सूकी करी बटेटानी भाजी
पोचा पोचा चोपडा प्रेमथी बनाव्या
ताजी करी तांदळियानी भाजी
मारे घेर आविया...
मेथीनी भाजीनां मुठियां बनाव्यां
में तो वालोळमां दीधा वघारी
नानी नानी रोटलीनां फुलकां बनाव्यां
जमवा पधारो काका-पप्पा-स्वामी
मारे घेर आविया...

जळ रे घेलानी हुं तो झारी भरी लावी
तमे आचमन करो ने मारा स्वामी
हळवे हळवे जळ पीवो
ने तमे अवतारना अवतारी
मारे घेर आविया...
लविंग सोपारी ने पानबीडी वाळी
तज अेलची जावंत्री सारी
निशदिन आवो तो भावे करी भेटुं
अेम मागे जेराम ब्रह्मचारी
मारे घेर आविया...

२

जमो थाळ जीवन जाऊं वारी,
धोऊं कर चरण करो त्यारी
जमो थाळ जीवन...
बेसो मेल्या बाजोठिया ढाळी, कटोरा कंचननी थाळी

जळे भर्या चंबु चोखाळी... जमो थाळ...
करी काठा घउंनी पोळी, मेली धृत साकरमां बोळी
काढ्यो रस केरीनो घोळी... जमो थाळ...
गळ्या साटा घेबर फूलवडी, दूधपाक मालपूआ कढी
पूरी पोची थई छे घीमां चडी... जमो थाळ...
अथाणां शाक सुंदर भाजी, लावी छुं तरत करी ताजी
दहीं भात साकर छे झाझी... जमो थाळ...
चळुं करो लावुं जळ झारी, अेलायची लविंग सोपारी
पानबीडी बनावी सारी... जमो थाळ...
मुखवास मनगमता लईने, प्रसादीनो थाळ मुने दईने
बेसो सिंहासन राजी थईने... जमो थाळ...
कमरे कसीने फेंटो, राजेश्वर ओढीने रेंटो
भूमानंदना वा'लाने भेटो... जमो थाळ...

ध्यानमूलम् गुरुर्मूर्ति, पूजामूलम् गुरुर्पदम् ।
मंत्रमूलम् गुरुर्वाक्यम् मोक्षमूलम् गुरुकृपा ।।

ब्रह्मानंदं परम सुखदम् केवलम् ज्ञानमूर्तिं
द्वंद्वातीतं गगन-सदृशम् तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी-साक्षीभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्‌गुरुं तं नमामि ।।
योगीराजम् नमामि ।।

श्रीमत्सद्‌गुणशालिनं चिदचिदि व्याप्तं च दिव्याकृतिम्
जीवेशाक्षरमुक्तकोटिसुखदम् नैकावताराधिपम् ।
ज्ञेयं श्रीपुरुषोत्तमम् मुनिवरै र्वेदादिकीर्त्यम् विभुम्
तं **मूलाक्षरयुक्तमेव सहजानंदम्** च वंदे सदा ।।

श्री वासुदेव विमलामृत धामवासम् ।
नारायणम् नरकतारण नाम धेयम् ।
श्यामम् शीतम् द्विभुजमेव चतुर्भुजम् च ।
त्वाम् भक्ति धर्म तनयम् शरणम् प्रपद्ये ।।

मूकं करोति वाचालम् पंगु लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वंदे परमानंदम् माधवम् ।।

वसुदेवसुतम् देवम् कंस चाणुर मर्दनम् ।
देवकी परमानंदम् कृष्णम् वंदे जगद्‌गुरुम् ।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात् पूर्ण मुद्‌च्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते ।।

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यंकरवावहै ।
तेजस्वि नावधितमस्तु मा विद्धिषावहै ।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ।।

श्रीपतिं श्रीधरं सर्वदेवेश्वरं
भक्तिधर्मात्मजं वासुदेवं हरिं ।
माधवं केशवं कामदं कारणं
स्वामिनारायणं निलकंठं भजे ।।

मंत्र पुष्पांजलि

सेवन्तिका बकुल चंपक पाटलाब्जै ।
पुन्नागजाति करवीर रसाल पुष्पैः ।
कुन्दप्रवाल तुलसीदल मालतीभिः ।
त्वाम् पूज्यामि जगदीश्वर लोकनाथ
हरि ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवाः
स्थानि धर्माणि प्रथमान्यासन तेहनाकम् महिमानः
सूच यंत्रः यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः
हरि ॐ विश्वचक्षुतो, विश्वतोमुखो, विश्वतो बाहुरतः
विश्व तस्मात् सम बाहुभ्याम् धिमही संप
तंत्रै धार्वाभूमि जनयेन देव अेकः
नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धिमही
तन्नो विष्णु प्रचोदयात्
श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्त मंडळ सहिताय
मंत्रपुष्पांजलि समर्पयामि ।।

स्वामिनारायण स्वामिनारायण
भज मन प्यारे स्वामिनारायण
स्वामिनारायण स्वामिनारायण
भज मन प्यारे स्वामिनारायण